अध्याय 8

स्थानीय शासन

– **स्थानीय शासनः** गांव और जिला स्तर के शासन को स्थानीय शासन कहते है। यह आम आदमी का सबसे नजदीक का शासन है। इसमें जनता की प्रतिदिन की समस्याओं का समाधान बहुत तेजी से तथा कम खर्च में हो जाता है।

– **लोकतंत्र का अर्थ है** सार्थक भागीदारी तथा जवाबदेही। जीवंत और मजबूत स्थानीय शासन सक्रिय भागीदारी और उद्देश्यपूर्ण जवाबदेही को सुनिश्चित करता है। जो काम स्थानीय स्तर पर किए जा सकते हैं वे काम स्थानीय लोगों तथा उनके प्रतिनिधियों के हाथ में रहने चाहिए। आम

– जनता राज्य, सरकार या केन्द्र सरकार से कहीं ज्यादा स्थानीय शासन से परिचित होती है।

– **भारत में स्थानीय शासन का विकासः** प्राचीन भारत में अपना शासन खुद चलाने वाले समुदाय, ''सभा'' के रूप में मैजूद थे। आधुनिक समय में निर्वाचित निकाय सन् 1882 के बाद आस्तित्व में आए। उस वक्त उन्हें ''मुकामी बोर्ड'' कहा जाता था। 1919 के भारत सरकार अधिनियम के बनने पर अनेक प्रांतो में ग्रम पंचायते बनी।

जब संविधान बना तो स्थानीय शासन का विषय प्रदेशों को सौंप दिया गया। संविधान के नीति निर्देशक सिद्धांतों में भी इसकी चर्चा है।

– **स्वतंत्र भारत में स्थानीय शासनः** संविधान के 73 वें और 74वें संशोधन के बाद स्थानीय शासन को मजबूत आधार मिला। इससे पहले 1952 का ''सामुदायिक विकास कार्यक्रम'' इस क्षेत्र में एक अन्य प्रयास था इस पृष्ठभूमि में ग्रामीण विकास कार्यक्रम के तहत एक त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की शुरूआत की सिफारिश की गई। ये निकाय वित्तीय मदद के लिए प्रदेश तथा केन्द्रीय सरकार पर बहुत ज्यादा निर्भर थे। सन् 1987 के बाद स्थानीय शासन की संस्थाओं के गहन पुनरावलोकन की शुरूआत हुई।

– सन् 1989 में पी.के. थुंगन समिति ने स्थानीय शासन के निकायों को संवैधानिक दर्जा प्रदान करने की सिफारिश की।

– संविधान का 73वां और 74 वां संशोधनः सन् 1992 में ससंद ने 73वां और 74 वां संविधान संशोधन पारित किया।

– 73वां संशोधन गांव के स्थानीय शासन से जुड़ा है। इसका संबंध पंचायती राज व्यवस्था से है। 74वां संशोधन शहरी स्थानीय शासन से जुड़ा है।

– 73वां संशोधन– 73वें संविधान संशोधन के कुछ प्रावधान

(1) **त्रि–स्तरीय ढांचाः** अब सभी प्रदेशों में पंचायती राज व्यवस्था का त्रि–स्तरीय ढांचा है।

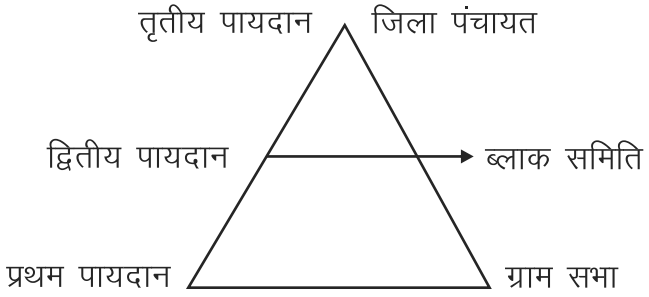

(2) **चुनावः** पंचायती राज संस्थाओं के तीनों स्तरों के चुनाव सीधे जनता करती है। हर निकाय की अवधि पांच साल की होती है।

(3) **आरक्षणः**

– महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित

– अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जन जाति के लिए उनकी जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण का प्रावधान है।

– यदि प्रदेश की सरकार चाहे तो अन्य पिछड़ा वर्ग (ओ.बी.सी.) को भी सीट में आरक्षण दे सकती है।

इस आरक्षण का लाभ हुआ कि आज महिलाएं सरपंच के पद पर कार्य कर रही है।

– भारत के अनेक प्रदेशों के आदिवासी जनसंख्या वाले क्षेत्रों को 73 वें संविधान के प्रावधानों से दूर रखा गया परन्तु सन् 1996 में एक अलग कानून बना कर

पंचायती राज के प्रावधानों में, इन क्षेत्रों को भी शामिल कर लिया गया।

- **राज्य चुनाव आयुक्तः** प्रदेशों के लिए यह जरूरी है कि वे एक राज्य चुनाव आयुक्त नियुक्त करें। इस चुनाव आयुक्त की जिम्मेदारी पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव कराने की होगी।
- **राज्य वित्त आयोगः** प्रदेशों की सरकार के लिए जरुरी है कि वो हर पांच वर्ष पर एक प्रादेशिक वित्त आयोग बनायें। यह आयोग प्रदेश में मौजूद स्थानीय शायन की संस्थाओं की आर्थिक स्थिति की जानकारी रखेगा।
- **74वां संशोधनः** 74वें संशोधन का संबंध शहरी स्थानीय शासन से है अर्थात् नगरपालिका से।

  शहरी इलाकाः (1) ऐसे इलाके में कम से कम 5000 की जनसंख्या हो (2) कामकाजी पुरूषों में कम से कम 75% खेती बाड़ी से अलग काम करते हो (3) जनसंख्या का घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो।

  विशेषः अनेक रूपों में 74 वें संविधान संशोधन में 73वे संशोधन का दोहराव है लेकिन यह संशोधन शहरी क्षेत्रों से संबंधित है। 73 वें संशोधन के सभी प्रावधान मसलन प्रत्यक्ष चुनाव, आरक्षण विषयों का हस्तांतरण, प्रादेशिक चुनाव आयुक्त और प्रादेशिक वित्त आयोग 74 वें संशोधन में शामिल है तथा नगर पालिकाओं पर लागू होते हैं।

  73वें और 74वें संशोधन का क्रियान्वयनः (1994–2016) इस अवधि में प्रदेशों में स्थानीय निकायों के चुनाव कम से कम 4 से 5 बार हो चुके है। स्थानीय निकायों के चुनाव के कारण निर्वाचित जन प्रतिनिधियों की संख्या में निरंतर भारी बढोतरी हुई है। महिलाओं की शक्ति और आत्म विश्वास में काफी वृद्धि हुई है।
- **विषयों का स्थानांतरणः** संविधान के संशोधन ने 29 विषय को स्थानीय शासन के हवाले किया है। ये सारे विषय स्थानीय विकास तथा कल्याण की जरूरतो से संबंधित है।

स्थानीय शासन के विषय–

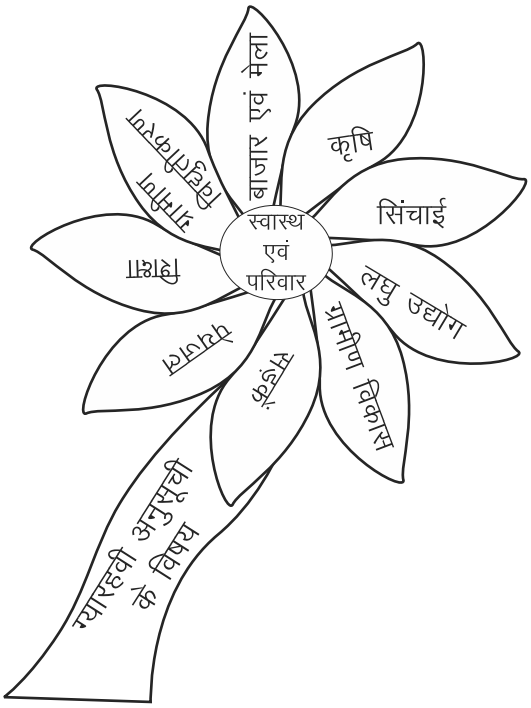

स्थानीय शासन के समक्ष समस्याएं–

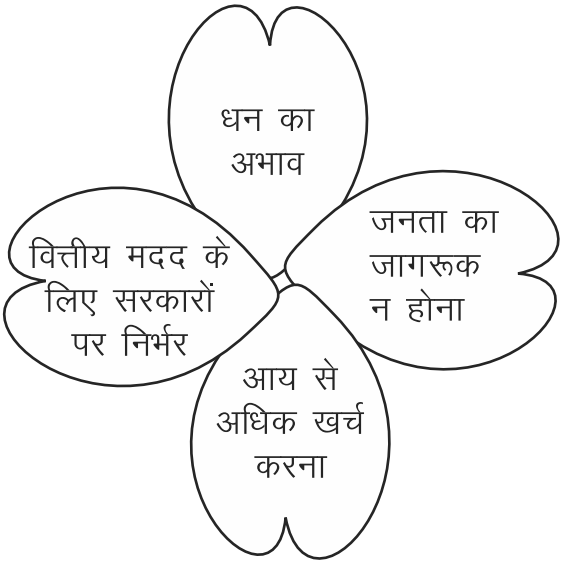

प्रश्नावली

एक अंकीय प्रश्नः–

1. स्थानीय शासन के निकायों को संवैधानिक दर्जा प्रदान करने की सिफारिश किस समिति ने की तथा कब?
2. स्थानीय शासन की विचारधारा का विचार किस देश से ग्रहण किया गया।
3. संविधान का 73वां तथा 74वां संशोधन संसद में कब पारित हुआ तथा इसे कब लागू किया गया?
4. स्थानीय शासन संविधान की किस सूची का विषय है?
5. त्रिस्तरीय ढांचे से क्या अभिप्राय है?
6. ग्राम सभा का सदस्य कौन व्यक्ति होता है?
7. ग्राम पंचायतों व नगरपालिकाओं के चुनाव कितने वर्षों के लिए किए जाते है?
8. पंचायती राज की संस्थाओं में महिलाओं के लिए कितने प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गई है?
9. संविधान के किस अनुच्छेद के द्वारा ग्यारहवीं अनुसूची के विषय प्रांतीय सरकार पंचायतों को दे सकती है?
10. पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव की जिम्मेदारी किस अधिकारी को दी गई है?
11. नगर निगम के चुनाव के लिए उम्मीदवार की आयु कितनी होनी चाहिए।

दो अंकीय प्रश्नः–

1. भारत में स्थानीय शासन के अधिक मजबूत न होने के दो कारण लिखिए।
2. ''शहरी इलाका'' शब्द से क्या अभिप्राय है?
3. नगर निगम तथा नगरपालिकाएं किस प्रकार के शहरों में कार्यरत होती हैं?
4. ग्राम पंचायतों के क्या–क्या कार्य हैं? किन्हीं दो का उल्लेख करो।
5. पंचायती संस्थाओं में महिलाओं को जो आरक्षण दिया गया है उससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति में क्या बदलाव आया है? स्पष्ट करो।
6. स्थानीय शासन से आम नागरिकों को क्या लाभ हुए है?
7. स्थानीय शासन अपना कार्य उतनी दक्षता से नहीं कर पाता, जिसके लिए उसकी स्थापना हुई थी? क्यों?
8. राज्य का वित्त आयोग कितने वर्ष के लिए बनाया जाता है तथा उसका मुख्य कार्य क्या है?

9. अभी हाल में नगर निगम के कुछ रिक्त स्थानों पर चुनाव हुए हैं आप के विचार से ये चुनाव कराए जाने का क्या कारण रहा होगा?

10. पंचायती निकायों की व्यवस्था हमारे देश में प्राचीनकाल में भी थी। वर्तमान समय में इनकी कार्यप्रणाली में क्या सुधार हुए हैं?

11. नगर – निगम का मुखिया क्या कहलाता है? इसका कार्य काल लिखें।

चार अंकीय प्रश्नः–

1. स्थानीय शासन का क्या महत्व है?

2. नगर निगम तथा नगरपालिकाओं के चार कार्य लिखें।

3. मेयर कौन होता है?

4. इस समय दिल्ली में कितने नगर निगम हैं? इतने निगमों के बनाए जाने का क्या कारण है?

5. नगर निगम आम जनता की समस्याओं का समाधान करने में कहां तक सफल रहे है?

6. पंचायती राज संस्थाओं के समक्ष कौन–कौन सी समस्याएं है?

7. ''स्थानीय संस्थाएं स्वायत्त नहीं है इसीलिए यह कुशलता पूर्वक कार्य नहीं कर पाती'' आपके विचार से क्या यह कथन सत्य है? कैसे?

8. ''लोकतंत्र तभी सफल होता है जब नागरिकों की सक्रिय भागीदारी होती है'' इस कथन को स्पष्ट करें

9. ''स्थानीय शासन में महिला आरक्षण का लाभ वास्तव में पुरूष सत्तात्मक समाज ले रहा हैं''? क्या आप इस बात से सहमत है? तर्क दीजिए।

10. जब भी लोकतंत्र को ज्यादा सार्थक बनाने और ताकत से वंचित लोगों को ताकत देने की कोशिश होगी तो समाज में संघर्ष और तनाव का होना तय है? क्या आप इस विचार से सहमत है? स्पष्ट करें।

पांच अंकीय प्रश्नः–

1. ''गांधी जी का मानना था कि ग्राम पंचायतों को मजबूत बनाना सत्ता के विकेन्द्रीकरण का कारगर साधन है। विकास के हर पहलू में स्थानीय लोगों की भागीदारी होनी चाहिए ताकि यह सफल हो सके। समूचे भारत की आजादी की शुरूआत सबसे नीचे से होनी चाहिए। इस तरह हर राज्य एक गणराज्य होगा।''

   (क) ''सत्ता के विकेन्द्रीकरण'' से क्या अभिप्राय है?

   (ख) गणराज्य से क्या अभिप्राय है?

(ग) पंचायतों को मजबूत कैसे बनाया जा सकता है? कोई दो सुझाव दीजिए।

(घ) ''आजादी की शुरूआत सबसे नीचे से होनी चाहिए'' इस कथन से क्या अभिप्राय है?

2. चित्र को ध्यान से देखें और प्रश्नों के उत्तर दें–

→ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ संख्या 188

(1) इस चित्र में जो लिखा है उससे आप क्या समझ पा रहे है?

(2) स्थानीय शासन की मदद से क्या इस उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है? कैसे?

(3) इस उद्देश्य की प्राप्ति में किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

छः अंक के प्रश्न–

1. स्थानीय शासन से क्या अभिप्राय है तथा इसका नागरिकों के रोजमर्रा के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. पंचायती राज व्यवस्था से क्या अभिप्राय है? यदि आप जिला कलैक्टर होते तो आप गांवों की किन–किन समस्याओं का समाधान करते?
3. यदि स्थानीय निकाय न होते तो नागरिकों की दिन प्रतिदिन की समस्याओं का समाधान हो पाता या नहीं? क्यो?
4. नगर निगम को आय कहां से प्राप्त होती है? क्या यह धन नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए पर्याप्त होता है? क्यों?
5. यदि आप अपने गांव की सरपंच होतीं तो समाज आपके कार्यों में किस प्रकार की बाधा उत्पन्न करता? तब आप उन बाधाओं से कैसे छुटकारा पातीं?

उत्तरमाला

एक अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. थुंगन समिति, 1989
2. ब्राजील
3. 1992, 1993
4. राज्य सूची
5. ग्राम पंचायते निचले स्तर पर, ब्लॉक समिति मध्य स्तर पर और जिला परिषद ऊपरी स्तर पर
6. वे सभी जो 18 वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके व्यक्ति जो ग्राम पंचायत के चुनाव में वोट डालने के अधिकारी हैं।
7. 5 वर्षों
8. 1 तिहाई
9. अनुच्छेद 243
10. राज्य के चुनाव आयुक्त
11. 21 वर्ष

दो अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. जातिवाद, गुटबाजी, सांप्रदायिकता
2. (i) जनसंख्या कम से कम 5000, (ii) 75% से अधिक कामकाजी पुरूष खेती बाड़ी से अलग काम करते हो, (iii) जनसंख्या का घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो।
3. नगर निगम बड़े शहरो में, नगरपालिकाएं छोटे शहरो में।
4. सफाई, बिजली, पानी की व्यवस्था, सड़कों का निर्माण, जन्म तथा मृत्यु का पंजीकरण आदि।
5. आज अनेकों महिलाएं सरपंच तथा मेयर जैसे पदों पर आसीन है उनमें पहले से ज्यादा शक्ति तथा आत्मविश्वास आया है। महिलाओं की राजनीतिक समझ में वृद्धि हुई है।
6. नागरिकों की समस्याओं के समाधान बहुत तेजी से तथा कम खर्च में हो जाते है। नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी बढ़ती है।

7. धन का अभाव रहता है। आय के अनुपात में खर्च अधिक है इसलिए राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार के अनुदान पर निर्भर रहना पड़ता है।

8. 5 वर्ष के लिये स्थानीय शासन की संस्थाओं की आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाना।

9. ये स्थान कई कारणों से रिक्त हुए होंगे।

   – किसी निगम पार्षद की मृत्यु के कारण

   – किसी निगम पार्षद का दल बदल लेने के कारण

   – किसी निगम पार्षद का विधायक बन जाने के कारण

10. प्राचीनकाल में भी स्थानीय संस्थाएं थी परन्तु वे जनता के प्रति जवाबदेह नहीं थी। आज ये संस्थाएं अधिक उत्तरदायी है और जनता के प्रति जवाबदेह भी।

11. मेयर या महापौर, 1 वर्ष

चार अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. स्थानीय शासन का हमारे जीवन में बहुत महत्व है यदि स्थानीय विषय स्थानीय प्रतिनिधियों के पास रहते है तो नागरिकों के जीवन की रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान तीव्र गति से तथा कम खर्च में हो जाती है।

2. सफाई का प्रबंध, बिजली का प्रबंध, पेयजल की व्यवस्था, जन्म और मृत्यु का पंजीकरण, सड़कों का निर्माण व मरम्मत, शमशान घाटों की व्यवस्था आदि।

3. नगर निगम के सदस्यों का मुखिया होता है।

4. इस समय दिल्ली में तीन नगर निगम है, उत्तर दिल्ली, पूर्वी दिल्ली तथा दक्षिणी दिल्ली नगर निगम। क्योंकि दिल्ली की जनसंख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और उनकी समस्याएं भी। एक नगर निगम सबकी समस्याओं का समाधान उतनी कुशलता से नहीं कर पा रहा था जितना तीन नगर निगम कर पा रहें हैं।

5. नगर निगम जनता की समस्याओं का समाधान उस हद तक नहीं कर पा रहे जितना वो कर सकते हैं। आज भी सड़कें टूटी रहती हैं कूड़े के ढेर जगह–जगह देखे जा सकते हैं। पानी, बिजली की समस्या का समाधान किया जा चुका है परंतु फिर भी गर्मी के दिनों में इन दोनों से ही आम नागरिकों को जूझना पड़ता है।

6. धन की समस्या, जनता का जागरूक न होना, राजनीतिक हस्तक्षेप, आय से अधिक व्यय होना, ।

7. हाँ, यदि ये संस्थाएं स्वायत्त हो जाएं तो नागरिकों की समस्याएं जल्दी सुलझेंगी और ये संस्थाएं जनता के प्रति उत्तरदायी भी होंगी ।

8. नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी लोकतंत्र की सफलता के लिए अनिवार्य है । जागरूक नागरिक ही लोकतंत्र की सार्थक भागीदारी कर सकता है । तभी सरकार जवाबदेह होगी ।

9. अनेक मामलों में यह देखा गया है कि महिलाएं अपनी मौजूदगी दर्ज कराने में असफल रही हैं या महिला को पद पर आसीन करा कर परिवार का मुखिया या पुरूष उसके बहाने फैसले लेता रहता है ।

10. हाँ, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के आरक्षण को संविधान ने अनिवार्य बना दिया था इसके साथ ही, अधिकांश प्रदेशों ने पिछड़ी जाति के लिए आरक्षण का प्रावधान बनाया । इससे स्थाानीय निकायों की सामाजिक बुनावट में भारी बदलाव आए । कभी–कभी इससे तनाव पैदा होता है और सत्ता के लिए संघर्ष तेज हो जाता है ।

पाँच अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. (क) सत्ता के विकेन्द्रीकरण का अर्थ है सत्ता जनता तक पहुंचे जैसे गांधी जी चाहते थे कि ग्रामोदय की विचारधारा सत्ता की विकेन्द्रीकरण है । स्थानीय स्तर की समस्याएं स्थानीय स्तर पर सुलझ जाएं ।

   (ख) गणराज्य से अभिप्राय है जहां राज्य का प्रमुख जनता के द्वारा चुना हुआ प्रतिनिधि होता है यदि स्थानीय शासन को स्थानीय जनता तक पहुंचाया जाएगा तो हर ग्राम एक गणराज्य बन जाएगा ।

   (ग) – उन्हें धन की कमी नहीं होनी चाहिए ।

   – जनता को जागरूक होना चाहिए ।

   (घ) इसका अर्थ है समस्याओं के समाधान स्थानीय जनता के प्रतिनिधियों द्वारा हो सकें । आम जनता की पहुँच वहाँ तक है ।

2. (क) इसक अर्थ है ये हमारा गांव है और इसमें हमारा राज होना चाहिए ।

   (ख) हां, क्योंकि स्थानीय प्रतिनिधि स्थानीय समस्याओं का समाधान अच्छे प्रकार से कर सकते हैं, क्योंकि वे समस्याओं से अवगत होते हैं ।

(ग) कभी–कभी धन की समस्या, सरकार का हस्तक्षेप, आय से अधिक व्यय होने के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

छः अंकीय प्रश्नों के उत्तरः–

1. स्थानीय शासन स्थानीय मामलों की देखभाल करती है नागरिकों की दिन प्रतिदिन की समस्याओं का समाधान तेजी से तथा कम खर्च में कर सकती है। इससे नागरिक सामाजिक तथा राजनीतिक रूप से भागीदार बनता है।
2. गांवों के स्थानीय शासन को पंचायती राज कहा जाता है। इसके तीन स्तर है। (छात्र अपने विवेक से उत्तर देगा)
3. छात्र अपने विवेक से उत्तर देगा।
4. नगर निगम बहुत से कर लगाता है जैसे गृहकर, जल कर, साप्ताहिक बाजारो में सामान बेचने वालों पर कर, आदि राज्यों से अनुदान प्राप्त करके भी नगर निगम धन प्राप्त करते हैं। नहीं, क्योंकि आय से अधिक व्यय किया जाता है और राज्य सरकारों से अनुदान प्राप्त करने के लिए बहुत देर हो जाती है।
5. छात्र अपने विवेक से उत्तर देंगे।